श्रीसीताराम मानसी पूजा

* भावना अष्टयाम सेवा *

मङ्गलाचरण

वन्दे ब्रह्मादिवन्द्यं विपुलगुण निधिं वेद वेद्यंवरिष्ठं
वैदेहीवल्लभाख्यंविमलविधुमुखं वाणवाणासनाढ्यं
विश्वाद्यं विश्वपूज्यं वरदमतिवलं वानराधीशवंधुम्
विश्वेशं वारिजाक्षं विभुमतिविभवं विश्ववीरेंद्ररामम्

दो०—

स्वामी रामानन्द पद, वन्दो कीलसु अग्र।
नाभा तुलसीदास गुरु, कामदेन्द्र अव्यग्र ॥
श्री रघुनन्दन जानकी, भरत लखन रिपुसाल।
वन्दो हनुमत आदि युग, परिकर पंचरसाल ॥
सख्यदास शृङ्गार युत, मानस सेवारीति।
रचीसुखद संक्षेप विधि, विनवों सबहीसुप्रीति ॥

स०—राजत रत्न सिंहासन मध्य सिया युत श्यामल राम सुजाना।
छत्र सुलच्छन लाल लिये छबि जासु छपाकर कोटि समाना ॥
श्री भरतौ भरतानुज चौंर चलावत दक्षिण बाम बिधाना।
मारुत मारुत लाल करैं रसरङ्ग मणीं कर यों उरध्याना ॥ १ ॥

श्रीसम्प्रदाय श्रीयदाचार्य गुरुमुख से श्रीरामषडक्षर मंत्रराज द्वयमंत्र और अष्टाक्षर शरणागति मंत्र तथा श्रीरामाभय प्रदान चरम मन्त्र ये तीनों रहस्यों से संयुक्त श्रीजानकी षडक्षर मंत्र और श्रीभरत श्रीलक्ष्मण श्रीशत्रुघ्न श्रीहनुमान श्रीगुरुमंत्रों को प्राप्त भया सपरिवार श्रीसीतारामोपासक अधिकारी प्रभात पिछले पहर में श्रीसीताराम नाम रूप स्मरण करते जागे। और करमुख पदधोय शुद्ध हो आसन पर सावधानी से बैठ के श्रीगुरुपरम्परा का पाठ कर श्रीमदाचार्य गुरुदेव का ध्यान पूर्वक साष्टाङ्ग प्रणाम करैं। और पूजन करि आज्ञा लेके मनही से श्रीसरयूजी में जाय प्रणाम करिके पाँच गोता लगावे और दिव्य दृष्टि से ऐसा देखे कि यह मेरा मायिक शरीर छूट गया और भावनामय दिव्य देह होगई। तब श्रीअवध का दर्शन करते चले दिव्य कांचन मणिमय द्वार कोट भवन बाजार देखते श्रीसीताराम शयन भवन में जाय तिससुवर्ण शाला के आगे श्रीरामभक्तिजू का दर्शन करै, अर्थात् श्रद्धा क्षमा दया शान्ति नम्रता प्रीति श्रीहरि गुरु साधु सेवा आदि दिव्य अङ्गों से युक्त श्रीसीतारामपरा प्रीति रूपा दिव्यमूर्ति मती कोमलासन पर विराजी भईं और श्रीसीताराम सेवा सामग्री मंगल वस्तु पुष्पमाला, मंजरीयुततुलसी, दधि, दिव्यफल, जवादिको के अङ्कुर इत्यादि थारों में भरे लिये अनेक सखियाँ समीप में सोहती हैं। जाय के तीन प्रणाम करै चन्दन माला आदि चढ़ाय के चरणों में मस्तक धर के बैठ जाय। तब श्रीभक्तिजू मस्तक पर हस्त धरिके पुत्रवत् प्यार करती हैं। और साधक को आगे करि सखिन सहित शयन शाला के द्वार पर जाय के सप्रीति प्रार्थना करने लगीं।

सवय्या

कंज खिले रसरङ्ग मणि यश भृंगभने प्रभु जयति उचारे।

रैन गई सुख सैन सुदैन चहैं रवि देखन नैन तिहारे।
दास सखा सखि भ्रात पितागुरु मातन के प्रिय प्राण अधारे।
जानकि जानकि जीवनजू ममजीवन जागिये जागिये प्यारे ।।२

हे आनन्द घन ? रजनी बीत गई जागि के दर्शन जल दैके लोचन चातकों की प्यास हरिये । हे श्रीसियारघुनन्दन युगल चन्दजी निद्रात्यागी के शोभा सुधापिवाय के लोचन चकोरों को सुखी करिये। इत्यादिक विनय सुनि श्रीस्वामिनी रघुनन्दन दयालजी जागिके परस्पर केश वस्त्रादिक सम्हारते भये और श्री प्रभु के शिर पै स्वामिनीजी ताजटोपी अथवा जरतारी पाग धर देती भईं और प्रियतम प्रियाजी सामने विराज गये, तब श्रीभक्ति हितकारणीजो परदा उघार दैती भईं आनन्दकन्द श्रीरघुनन्दनजी सहित श्रीस्वामिनीजी के युगल मुखचन्द्र को देखि जयहो २ मङ्गल हो २ इस प्रकार अभिनन्दन शब्द करिके सब कोई सप्रेम प्रणाम करि करि श्यामगौर शोभा लखि २ लोचन सुफल करने लगे। तब श्रीचारुशीला श्रीभक्तिजू मङ्गल थार जिसमें पुष्पमाला, तुलसी, दिव्यफल, दधिमाखन, घृतमधु, जवांकुर, दुर्वा, अतर इत्यादि सब धरे हैं सो साधक कर में देती भईं। दूसरा आप भी लेके श्रीयुगल मंगल विग्रहजी के आगे चौकी पर धर देती भईं। श्रीराजीवलोचनजी दिव्य दृष्टि से देखते भये। भाविकजन युगल कमल के फूल लैके श्रीसीतारामचन्द्रजी को सुंघाय के करों में अर्पण करि कृतार्थ भया। तदुपरि परिकरजनों ने चन्दन कांचन रचित दिव्य वस्त्र बिछी युगल चौकी धरि दन्त धावन की तैयारी की तब श्री भक्तिप्रीतिरूपाजी की प्रार्थना से श्री रघुनन्दन जनकनन्दिनीजी भावुक और भक्तिजी के करावलम्बन पूर्वक पर्य्यङ्क से उतर २ उन चोकियों पर विराजे सेवाभिलाषी जन चाँदी के कोपर आगे धर दिया श्रीभक्तिजी जल ढारने लगीं

भक्तजन श्री चरण कमलों को धोय श्रीपदांगुष्ठों को लोचनों में लगाय प्रेम से पोंछकर परमानन्द पाया। पुनि श्री करकञ्जों को धुवाय के गिलास में जल देकर आचमन कुल्ला कराय के तब जामुन आदिक उत्तम काष्ठ की बारह अंगुल की दन्तधावन प्रभाती अर्पण किया। फिर इसीरीत से श्रीस्वामिनी जी के श्री चरण सरोजों को धोय के नेत्रों में लगाय प्रोक्षण कर हस्त धोवाय कुल्ला कराके दन्तधावन अर्पण किया। इसके आगे श्रीस्वामिनीजी की सब सेवा श्रीभक्ति भाग्यवती जी करती हैं। और श्रीरघुवर जी की सब सेवा पूजन जन स्वयं करता है। सुवर्ण पात्र से सुगन्धियुक्त श्री सरयूजल प्रदान पूर्वक दन्त धावन कराय श्री मुखचन्द्र धोवाय के झीने वस्त्र से सुखमासिन्धु को श्री मुख प्रोक्षण किया। पुनि गज दन्त की ककही से बालों को सम्हारि माङ्गलिक चन्दन लगाय के मङ्गल मय कंठा कड़े बिजायठ मणि-माला कुंडल नूपुर तोड़े आदिक भूषण धारण कराय यथा काल अनुकूल वस्त्र धारण कराय मुख्य किरीट अथवा ताज या पाग शिरपैंच निजरुचि अनुकूल धारण कराय के माङ्गलिक तुलसी युत सुगंध फूलों की माला पहिराय के शोभा अवलोकन करि कृतार्थ भया। ऐसे ही श्रीभक्ति चारु शीलाजी श्रीसिया स्वामिनी जी की मङ्गल सेवा सप्रेम करती भईं। तब दिव्य धूप अर्पण कर नव बार आघ्राण कराय के समीप में धर दिया। तदुपरि चारि बत्ती का दीप नव बार फिराय के धर दिया; तब मंगलभोग अर्पण करता भया। गोघृत गोदधि मधु मिश्री ये चारों वस्तु मिलाय युगल मणि पात्रों में सखि ल्याईं। एक भक्ति जू कैङ्कर्य निपुणजन को देती भईं, सो वामहस्त में धरके सुवर्ण कर कमल से दक्षिण हस्त से श्री रामचन्द्र जी को खवाने लगीं। ऐसे ही दूसरे पात्र का मंगल भोग श्री भक्ति जी ने श्रीस्वामिनी जी को

खवावती भईं । पुनि दो घूंट जल पिवाय के श्री युगलचन्द्र को मुख पोंछ के इलाइची अर्पण कर प्रेमानन्द पाया तब अग्नि के सम रसनारूप ऐसी समवर्तिका की प्रज्वलित आरती श्री भक्तिजी ला के आगे चौकी पर धर देती भईं । प्रेमीजन श्रीप्रभुजी के सर्वाङ्ग में तीन बार जल उतारि के आचमन पात्र में डारि सर्वाङ्ग में वस्त्र भी फिराय अर्थात् न्यौछावर करिके किंकरी को दे दिया । श्री भक्ति जू मङ्गलनादमय घंटा और सखी वर्ग दिव्य वीणा मृदङ्ग झाँझ घरी शंखादि बाजा बजाने लगीं । नवलनेही जन नीराजन दोनों हाथों उठाय के आरति हरणजी के श्रीचरणसरोजों में चार बार उतारि पुनि दो बार नामि मंडल में एक बार श्री मुख में और सात बार सर्वाङ्ग में इस प्रकार चौदह फेर फिराय के पुनि ऐसेही श्रीस्वामिनीजो की आरती किया । अथवा श्रीसीतारामजी की एक ही साथ आरती किया और श्रीसीताराम जी के सर्वांग में पूर्ववत् जल वस्त्र फिराय के श्रीयुगल चरणों में तीन २ पुष्पांजली युगल मंत्र पढ़ के अर्पण किया पुनि चार प्रदक्षिणा करि स्तुति किया ।

वैदेही सहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे, मध्ये पुष्पकमासने मणिमये बीरासने संस्थितम् ॥ अग्रे वाचयति प्रभञ्जन सुते तत्वं मुनीन्द्रैः परम, व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामम्भजे श्यामलम् ॥ १ ॥ रघुवर तव मूर्तिर्मामके मानसाब्जे नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखे मे अनिशमतुलभक्त्या मस्तकं त्वत्पदाब्जे भवजलनिधि मग्नं रक्षमामार्त्तबन्धो ॥ २ ॥ इत्यादि स्तुति करि श्री शरणागतिमंत्र पढ़ि श्री युगल को तीन तीन साष्टांग प्रणाम करि श्रीस्वामिनी जी के बायें श्री भक्ति जी के समीप में बैठ के श्री सोभासिन्धु जी की शोभा अवलोकन करि प्रेमानन्द में मग्न भया । यहि विधि से उत्थापन सेवा मङ्गलभोग मङ्गल आरती

भई। आगे श्री अवधवासी रघुवंशी आदि समस्त प्रेमी श्रीरघुकुल वल्लभ जी के दर्शनाभिलाषीजन सर्वतोष सभा में आये। तब तिनके दर्शन प्रार्थना मिसु श्रीरघुनन्दन सुयश वन्दीजन गान किये सो सुनि श्री रघुवर किशोरजी श्री निमिराज किशोरी जी की ओर अवलोकन करि संग ही उठे। और श्रीभक्तिजी के दिये धनुर्बाण धारण करि सेवानिष्ठ साधक के स्थापित मखमल सुवर्ण सूत्र रचित पदत्राण धारण करि मन्द २ पधारे। श्री भक्ति चारुशीला जी छत्र धारण करती भईं और सहचरी वर्ग व्यजन चामर आदि लेके चलती भईं। युगलसखी पुरुष वेष किये मणि जटित सुवर्णों की छड़ी लिये महा मधुर स्वर से नकीब बोलती चलीं यथा जय जय श्रीजानकीकान्त श्रीरघुनन्दन कान्ता जी आप की जय होय प्रीति रीति कृपा कलाप तेज प्रताप की अतिशय वृद्धि हाय, हे निज जन लोचन चकोर वृन्द आनन्ददायक युगल चारु चन्द्रजी! आपका महामङ्गल होय। इत्यादिक शब्द बोलती चलीं, तब सेवाभिलाषीजन श्रीप्रभुरुचि पाय सवतोष सभा में आय श्री प्रभु का आगवन सुनाया। सुनते ही सब जन मानों घनधुनि से चातक मयूर सुखपूर उठ खड़े भये। ताही समय शोभादामिनी श्रीसिया भामिनी भूषित ब्रह्मानन्द घनसुख सुखमा बारि को झरी कर सभा सुशोभित कर देती भई। सर्वजन करांजली करि : जय जयकार शब्द करने लगे। श्रीयुगल सुन्दर जी सिहासन में विराज गये। तब सब प्रेमी जन यथा योग्य आशीर्वाद जोहार प्रणाम निवेदन किये, श्रीशोभाशील सिन्धु जी प्रणाम करि कृपादृष्टि से करकंज उठाय प्रियबचन कहि यथोचित सबका सम्मान करते भये। ताही समय निज सखा बृन्दसङ्ग लिये श्री लखनलाल जी आये और कर जोरि बोले अग्रज सेवा कांक्षी लक्ष्मणकृत प्रणति अङ्गीकार होय, ऐसा कहि साष्टांग प्रणाम

किये, सो अवलोकन करिके स्नेह सिन्धुवर बन्धुजी उठाय हर्षित हृदय में लगाय के सुखसिन्धु में मग्न करि के बैठ गये। और जब श्री प्राणनाथ जो उठते हैं तब श्रीजनक नन्दनीजी भी सदा उठ खड़ी होजाती हैं तेऊ बैठ गईं। तब लखनलालजी श्रीस्वामिनीजी के चरणों में शिर धरि प्रणाम करि अभिमत आशिष पाय प्रभु के दक्षिण आसन पर विराज गये। तब श्रीभरतलाल जी तथा श्री शत्रुघ्नलालजो निज सखागण सङ्ग लिये और दास वर्गसहित मनोहर मनुज तनुधारी श्री हनुमानजी आये और निज २ नामोच्चारण पूर्वक प्रणाम किये यथा अग्रजपदपङ्कज प्रेमाभिलाषी भरतकृत प्रणाम प्राप्त होय। ज्येष्ठ सेवानिष्ठ शत्रुघ्न कृत पद वन्दना स्वीकार होय। रघुबीर चरणानुचर हनुमतकृत चरणाभिवन्दन ग्रहण होय। इसी प्रकार से सब सखा दास वर्ग प्रणाम करते भये। तब श्री भरताग्रज सस्नेह सबको हृदय में लगाये। फिर सब कोई श्रीजनक नन्दिनी जी के पदपंकज में शिर धरि २ प्रणाम करि आशिष पाये। पुनि श्रीलखनलालजी सब से मिलि के यथोचित बैठाये अर्थात् श्रीराम जी के दक्षिण श्रीभरतलालजी, तिन्हके दक्षिण श्रीलखनलालजी, तिनके दक्षिण श्रीशत्रुघ्नलालजी, तिन्हके दक्षिण कुछ तिरिछे श्रीहनुमानजी बैठे और सखा दास वर्ग दोनों दिशि यथा योग्य अर्द्ध चन्द्राकार मंडल से बैठे। श्रीरामचन्द्र मुखचन्द्र सुधा माधुरी को निज २ लोचन चकोर करि सप्रेम पान करि रहे हैं। श्री मुख दर्शनाभिलाषीजन वर्ग सबही को समान सुख संतोष होता भया। तदपि शोभा सुधा पानकी सौगुनी प्यास बढ़ती भई। तब श्री भरतलाल जी तथा श्री लखनलाल जी के लाये मङ्गल थार श्रीदिव्य दम्पती जी के सन्मुख धरे गये। तिन्हैं सानन्द अवलोकन करते भये। श्रीभक्तिजू और श्री रामानुरागी जन उठके श्री लखनलालजो के

थार से युगल पुष्पमाला श्रीयुगल सरकार के श्री कंठों में अर्पण करि कमल के पुष्प जूही के गुच्छा सुंघाय कर कंजों में दे दिये। उसी थार से माला श्री भरत जी को पहिराय के पुष्प गुच्छा भी दे दिये। तैसे ही श्रीभरतलाल वाले थार से भी माला श्रीयुगल प्रभुन को पहिराय श्रीलखनलाल जी को श्रीशत्रुघ्नलालजी को और श्रीहनुमान जी आदिकों को माला गुच्छा कमल अर्पण कर पुनि श्रीरघुनन्दन जी और श्री स्वामिनी जी को दृष्टिभोग मेवा मिठाई अर्पण करि और सबों को दृष्टिभोग अर्पण किये। तदुपरि इसी रीति से इलाइची खवाय सबके अतर लगाये, तब श्री भक्तिजू अग्रभाग में आरती धर देती भईं और श्रीभक्तिजू की सहचरी वर्ग प्रथम की नाईं बाजा बजाने लगी। अनुरागी जैसे प्रथम आरती करि आया है तैसे ही श्री सीतारामचन्द्र जी की आरती करिके पश्चात् तीन २ बार श्रीभरतलालजी श्रीलखनलालजी श्री शत्रुघ्न लालजी श्रीहनुमानजी आदि सबकी आरती किया। पुनि तीन बार सर्व समाज की ओर दृष्टि करि आरती करिके प्रथम रीति से बारिवस्त्र उतारि तीन २ पुष्पांजली श्री युगल चन्द्रचरणों में दिया। एक २ पुष्पांजली श्री भरतादिकों को दे के इतने ही साष्टांङ्ग प्रणाम करि सब के चरणों में शिर धरि २ कृपा करि स्पर्श पाय श्री स्वामिनी जी के वामदिशि श्री भक्तिजू के पास बैठ गया। इस प्रकार सर्वतोष सभा में श्रीवल्लभ सेवा वल्लभ आरती होती भई। तदनन्तर गान कला सखी समाज युक्त यंत्रवाद्य सहित श्री रघुनन्दन जनक नन्दिनी सुयशगान करती भईं।

तब श्री सुमन्त सुत श्रीसुमुखजी उठ के करांजली जोरि बोले, हे श्री मन्महाराज नन्दनजी! स्नान का समय भया यह सुनि श्री सरयूकूल विहारीजी सहित समाज सहोदरों की ओर देखे, तब सब कोई करजोरि के उठ खड़े भये। श्री रघुनायक

जी सबों की ओर श्रीकृपा दृष्टि करि कहते भये, अब स्नान करना चाहिये। हे श्री भरतलाल श्रीलखनलाल आप सब कोई स्नान संध्यादिनित्य करिके जेवनार करने को शीघ्र आओ। श्रीमुख वचनासृत शिर धरि चरणाभिवन्दन करिके पधारे और सर्व सभाजन यथोचित श्रीरघुनन्दन जी को आशीर्वाद अभिवन्दन करि श्री रामरूप हृदय में धरि के गये। तब प्रिया सहित श्री रघुवंश भूषण परम विचित्र पालकी पर चढ़ि स्नानशाला के समीप आये। स्नानशाला की अधीश्वरी श्रीप्रेमतरङ्गिणीजी निज किंकरिन सहित आय आरती करि अर्घ देके मज्जनशाला में लिवाय गईं। श्रीमहाराज किशोर किशोरीजी यान से उतरि आसन पर बिराजे, तब श्रीरघुनन्दन जी सानन्दमंद विहँसि बोले, हे प्राण प्रिये! स्नान करना चाहिये। सो सुनि प्रियाजी सप्रेम कहती भईं, हे प्रियम्बद प्रभो! बहुत अच्छा। तब श्रीचन्द्र कलादि सखीवर्गों के सहित निज स्नानशाला को पधारीं। तब श्री रघुनन्दनजी वस्त्र विभूषन उतारे श्रीभक्तिजी और भक्तिजन दिव्य सुगंधशाली तैल उवटनादि श्रीअंगों में तथा केशों में लगाने के पश्चात् फुहारा सरीखे यंत्रों से सुगन्ध जलकी सूक्ष्म सहस्रों धारा श्रीअंग पर गिरती भईं। तिन्हैं वंदकर दाससखादि दोनों सेवा उत्साही दिव्य मंगल विग्रह की मालिस करि महामोद को पाये। तदुपरि श्रीभक्ति रस मण्डनजी जिस कुण्ड में श्रीसरयूजी की नहर लगी है तिसमें तीन गोता लगाय स्नान करि निकल आये। श्रीभक्तिजी और तदाश्रितजन भींजे झींने वस्त्रों से श्रीअंगों को पोंछि प्रथम सूत का वस्त्र दिये तिसको पहिर के श्रीप्रभु भीजा वस्त्र त्याग किये, तब कांचन सूत्रयुत लालकिनारीदार दिव्य पीताम्बर धारण कराया। उसी के साथ सुबर्ण सूत्र रचित बीच २ मणिजटित बन्दयुत विचित्र कटिसूत्र भी धारण कराया। फिर दिव्यासन

युत चौकी कुंड के तीर पर पूर्व मुख धर दिया। तिसपर बैठ के श्रीप्रभु सामान्य तिलक करि प्रातःसन्ध्या किये। पुनि पादुका पहिर के चले, समाज सहित आय के दिव्य शृंगार महल में विराजे, तब श्रीभक्ति सेवा सौभाग्यवती जी तथा सेवा सुभागी-जन सेवासामग्री सुधार के सेवा करने लगे। श्रीअलकावली सम्हारि शिखाबन्धन करि ललित रेखारचित केसर को तिलक किया और भक्ति भक्त दोऊ श्री प्रभु के सर्वांग में केसर को अंग राग अनुलेपन कर पीत यज्ञोपवीत पहिराया, श्रीचरणों में मणि जटित नूपुर अथवा मणिन जटित तोड़े पहिराया। कर कंजन में श्वेत रक्त मणि जटित कंकण और स्वर्ण रचित पंचरंग मणिजटित पहुँची पहिराये। दोनों हस्तों की अनामिका कनिष्ठिका अँगुलियों में दिव्यमणि जटित मुद्रिका पहिराये। युगलबाहू में श्वेत रक्त हरित मणि जटित अङ्गद पहिराये, श्रीकम्बुकंठ में कंठा कि जिसमें ढाई अंगुल लम्बायमान और करांगुष्ठ के बराबर मोटा रक्तवर्ण श्री कौस्तुम मणि मध्य में है तिस के दोनों दिशि हरित मणि तिनके दोनों दिशि हीरा तिनके दोनों दिशि रक्तमणि तिनके दोनों दिशि इन्द्र नील मणि तिनके दोनों दिशि पीत मणि इस प्रकार विचित्र पंचरंगमणि जटित ग्रीवाभरण है। सो धारण कराया, तिसके नीचे गजमुक्ताओं की माला, जिसके मध्य में पंचरंग मणि जटित चौकोण पदिक सोहत है और पदिक चौकी के दोनों दिशि एक २ मणि फिर एक २ रक्तमणि पुनि एक २ हरित मणि फिर तीन २ गजमुक्ता पुनि दो हरित के मध्य में एक रक्त मणि फिर तीन २ गजमुक्ता इसी प्रकार पचास मणि गणों से रचित हार हृदय तक है, सो पहिराया। तिसके नीचे मणि-कृत कमलों की माला जिसमें नील रक्त श्वेतवर्ण मणिगणों को कोरिके कमल रचे इस प्रकार से गुहे हैं कि एक २ नील और

एक २ रक्त तब दो २ श्वेत कमल हैं, इसी प्रकार से सौ कमल गुहे हैं और सुमेरु में लघु २ मणिगणों का गुच्छा लगा है सो तीन रंग मणि कमलों की माला पहिराये, एवं श्री उरकंठ में से तीन भूषण मुख्य पहिराये और प्रेमीपूजक निज देश रचित रुचि अनुकूल भूषन भी पहिरावै और श्री श्रवणों में कुण्ठल अर्थात सुवर्ण के बालाओं में एक २ श्वेत मणि पुनि एक २ हरित मणि और तीसरा सुराहीदार डेढ़ अंगुल लम्बायमान रक्तमणि पुनि एक २ हरितमणि, एक २ श्वेतमणि इस प्रकार पंचमणिमय कुंडल कपोलों तक झूलते भये, ते पहिराये, अथवा मकर कुंडल अर्थात् सुवर्ण के मणिजटित लघु २ मीन मुख पुच्छ मिलित कर्णों में प्रवेशित कपोलों के मध्य में झूलते भये। तिनके मध्य में नीचे एक २ सुराहीदार लाल मणि लटक रहे हैं ते पहिराये और श्रीमस्तक में महारत्नजटित नवखंड का कांचनकिरीट धारण कराया। पुनि हरित तुलसी और रक्त श्वेत पीत सुगन्धित पुष्पों की बनमाला धारण करायी। पुनः सुवर्ण सूत्र रचित लाल किनारी का दूसरा पीताम्बर दोनों स्कन्धों पर से धारण कराया। इस प्रकार सहज शृङ्गार करि के शोभा अवलोकन किया। तदुपरि प्रीतिरूपा भक्ति जू की रुचि पाय के श्री स्वामिनी शृङ्गारकुंज के समीप जाय इस प्रकार उच्चारण किया, अनन्त श्री स्वामिनी महारानी श्री रघुनन्दन वल्लभा जो की जय जयकार हो। तब श्री स्वामिनी जी की आज्ञा भई कि आओ, ऐसा सुनि जाय साष्टाङ्ग प्रणाम करि बोला, हे श्री कृपावती जी अनन्त श्री रघुवंश विभूषण प्राणप्रिय जी सर्व शृङ्गार सम्पन्न बिराजे हैं। अब केवल आप के दर्शनानन्द की इच्छा है, सो पूर्ण करिये, यह सुनि सानन्द कृपावलोकन करि दिव्य विभूषण वस्त्रादि सोलहौं शृङ्गार धारण किये पधारतीं भईं। समाज सहित स्वामि

समीप में आय के पद पङ्कजों में पुष्पाञ्जलि अर्पण करि नयनों से प्रणाम रूप पूजन करि सङ्ग में वाम भाग विराज गईं। उसी अवसर में प्रतिहारी आय करजोरि के श्री भरतलाल आदिकों का आगमन निवेदन किया। सुनि के श्री रघुनन्दन जी बोले, हे प्रीतिपुंजे ! श्री भरतादिक बन्धु आये हैं। श्री भक्ति जू कहती भईं हे ! प्राण वल्लभ जी परम मङ्गल हुआ और द्वार देश में जाय सादर लिवाय लाईं। सब कोई आय पूर्व परिचय क्रम से श्री दिव्य दंपती जी के पद पङ्कजों में शिर स्पर्श पूर्वक प्रणाम करि २ युगल कर कमल स्पर्श पाय २ प्रभु की आज्ञानुसार निज २ पद प्रच्छालन कराय सुवर्ण के आसनों पर यथोचित बैठ गये। अर्थात् श्री प्रभु के दक्षिण श्री भरतजी पुनि श्रीलक्ष्मण जी पुनि श्री शत्रघ्न जी तथा समस्त सखावर्ग और श्री युगल कृपालू जी के बाम दिशि श्री हनुमान जी आदिक प्रियदास सखा तथा सखीवर्ग सब यथोचित विराज गये। तब सेवानुरागी श्री भरतादि भ्राताओं को शिर से चरण स्पर्श युत प्रणाम किया और दिव्य चन्दन की चौकियाँ श्रीसीताराम जी के तथा श्री भरतादिकों के आगे धर दिया। तदुपरि दिव्य अमृतमय भोजन पदार्थों से भरे भये थार श्री स्वामी स्वामिनी जी के आगे चौकियों पर धर दिया और सर्व समाज के अग्र भाग में श्री भक्ति जी की किंकरीवर्ग सर्व भोजन वस्तु थारों में धर देती भईं। तब सेवाभिलाषी जन दिव्य दूध की पायस खीर षट् सुवर्ण के कटोरों में कर के एक थार में धर के श्रीराघवेन्द्र जी के आगे धर दिया तथा श्रीभक्ति जू श्री सरयू जल लघु दीर्घ दो २ पात्रों में भरि के सब के आगे धर देती भईं। सुजन ने प्रथम की नाईं धूप दीपादि करि कै प्रार्थना की, कि हे भावग्राहक भरत बन्धो ? इस बालक से कुछ बनता नहीं, आप अपनी कृपालुता से निज

सेवा सफल करिये। तब श्री प्रभु प्राण प्रिय जी कृपायुत मन्द विहँसि श्री भक्ति जू की ओर अवलोकि के सेवक पर कृपा दृष्टि करि आचमन लै के उन षट पायस पात्रों में एक पात्र में से ग्रास श्री मुख में देने लगे। जब तीन ग्रास पाये तब श्री स्वामिनी जी ने उस पात्र को उठाय के श्रीभरतलालजो की ओर कृपा दृष्टि करि अनुरागी जन के हाथ में धर देती भईं। प्रेमी श्री भरतलाल जी को अर्पण किया। ऐसे ही श्री बन्धु बल्लभ प्रभु प्रत्येक पात्रों में से तीन २ ग्रास पावते हैं। तब श्री स्वामिनी जी पात्रों को उठाय के प्रेमी के हाथ से श्री लक्ष्मणजी को, श्री शत्रुघ्न जी को, श्री हनुमान जी आदि को देती भईं। तदुपरि श्री जानकी वल्लभ जी पंचम पात्र में से पंच ग्रास पाय के वह पात्र उठाय के श्री सती सिरोमणि प्रिया जी के हाथ में धर दिये और भ्राताओं से कहते भये, हे तात! सब कोई पावो। सो आज्ञा शिर धरि सब कोई श्री रामप्रसाद पावने लगे। तथा श्री पतिव्रत पताकावती स्वामिनी जी ने भी प्रियतम की रुचि पाय प्राणनाथ की प्रसादी पावने लगीं। श्री प्रभु के पावते समय में पूजक प्रेमी जन व्यजन करता भया। ऐसा चिन्तवन करै कि श्री सीतारामजी समाज के सहित ये सब दिव्य पदार्थों का भोजन करि रहे हैं। यथा प्रथम दिव्य पायस पुनि दाल भात गो घृत केसर की कढ़ी पकौड़ी तथा लोक प्रसिद्ध शुद्ध स्वादिष्ट व्यंजन, अनेक प्रकार शाक, परवर, कदली, करेला इत्यादि और पूरी, पूर्ण पुरी, कचौड़ी, पापर आदिक पक्के आम, पके केला, पक्का कटहर, अमरूद, नारङ्गी, सेव, लीची, खिरणी और ऋतु २ के अनेक फल तैसे ही आम, अदरख, कटहल, कागदी निम्बू आदिकों के अचार आवँरा सेव नासपाती आदि के मुरब्बा मालपुआ, मोहनभोग, खाझा, दहिबरा बहुत प्रकार के मोदक पेड़ा करी बरफ़ी, जलेबी, अमरती,

गुलाबजामुन, फेनी, बतासफेनी इत्यादिक अनेक पकवान मिठाई खीर, मलाई, दधि, ओदन, सिखरन इत्यादिक षटरस चारि भाँति छप्पन प्रकार के भोजनों में जो जो अपने को प्रिय होंय सो सब ध्यान भावना करै। और अति प्रेमाभिलाष होय तो मूल मन्त्र उच्चारण करते अपने हाथ से पवावै भी। तथा श्री स्वामिनी जी को भक्ति जू के हाथ से पवावना ध्यान करै। बीच में और अन्त में सुगन्धित सरजू जल पान करावे। तदनन्तर भक्ति सहचरी वर्ग प्रसादी थाल उठाय के अन्यत्र धर रूपं चाँदी के कोपरों में (उसीर खस) धर के श्री रघुबर स्वामिनी जी के आगे धर देती भईं। तिन्हीं पात्रों में झारी से जल दै के भक्ति भक्त ने अँचवन कराय मुख हस्त पोछने को वस्त्र अर्पण किया। इसी भाँति भक्ति किंकरी वर्गों ने सब समाज को आचमन कराया। आगे की भूमि का उच्छिष्ठ झार कै शुद्ध कर देती भईं। तब भक्त जन दिव्य ताम्बूल श्री युगल प्रभुन को खवाय कै और कंचन के थार में बीरा भर कै श्री सीतारामजी के आगे धर दिया। तब श्री रघुवंश शिरोमणि जी दो २ बीरा श्री भरत-लाल जी, श्री लखनलाल जी, श्री शत्रुघ्नलाल जी, श्री हनुमत चारुशीलमणिलाल आदि को देते भये। ते दोनों हाथों से लै के माथ में लगाय खाते भये। तदुपरि श्रीसीतारामचन्द्र जी सहित समाज सभा में आ के श्री रत्नसिंहासन पर विराजे। श्री भक्ति जू ने श्री रघुनाथ जी के हाथ में धनुर्बाण धारण कराया। श्री लक्ष्मण जी दिव्य श्वेत छत्र लेते भये। श्री भरतजी दक्षिण दिशि, श्री शत्रुघ्नजी बाम दिशि युगल श्वेत चामर चलाने लगे। श्री हनुमान जी श्री भरतलालजी के समीप में खड़े हो के व्यजन बीजने लगे। श्री भक्ति चारुशीला जू श्री शत्रुघ्नजी के निकट में स्थित हो के दूसरा पंखा करने लगीं और सखासखी

दास दासी गण कोई मधुर स्वर से गान जय धुनि करने लगे।" कोई पुष्प वर्षा करने लगे, कोई जे प्रथम आरती में कहे गये हैं ते बाजा बजाने लगे और श्री रामभावुक जन थारी में सुमन शोभा संयुक्त आरती आनि आगे धरि जल और बस्त्र उतार के सप्रेम दोनों हाथ से आरती उठाय चार बार चरणों में दो फेरा नाभि देश में एक फेरा श्री मुख में और सात बार सर्बाङ्ग में उतारीं। ऐसे ही श्री अखिलेश्वरी जी की उतारता भया अथवा श्री युगल सरकार की एक ही साथ आरती किया। पुनि तीन २ फेरा श्री भरतजी, श्री लक्ष्मणजी, श्री शत्रुघ्नजी, श्री हनुमान जी आदि की उतारि के और समाज की ओर अनुसन्धान करि तीन बार आरती उतार के धर दिया। पुनि जल पट उतारि के तीन २ पुष्पांजलि श्री युगल चरणों में दिया और एक २ पुष्पांजलि श्री भरतजी, श्री लक्ष्मणजी, श्री शत्रुघ्नजी, श्री हनुमान जी की ओर दृष्टि कर के छोड़ दिया, पुनि श्री नामगान पूर्वक चार प्रदक्षिणा कर स्तुति करि के श्री सीतारामजी की तीन २ साष्टाङ्ग प्रणाम किया। और एक २ साष्टाङ्ग प्रणाम श्री भरत-लालजी आदिकों को करि के श्री भक्ति जू के निकट खड़े होय के समाज सहित अनन्त श्री राजाधिराज किशोर किशोरी जी की शोभा अवलोकि के कृतकृत्य हुए। आरती के उपरान्त बाजा यन्त्र सुधारि के गायक गुणी यश गान करने लगे। जब एक पद पूर्ण हुआ तब श्री भक्तवत्सल प्रभु भक्ततोषणी श्रीभक्ति जू से बोले, हे सर्व हितकारिणी ! अपने परिकरों को प्रसाद पवाओ और तुम भी ग्रहण करो। आज्ञा सुनि श्रीमती जी कहती हैं कि हे कृपासिन्धो ? बहुत अच्छा कह शीश नवाय सहचरी वर्ग तथा सेवाभिलाषीजन सहित आ के श्री सीताराम प्रसादामृत यथोचित सबों को दे के आप भी ग्रहण किया। श्री सरयू जल

पान कर आचमन कर परिकरों के सहित आय श्री प्रभु को प्रणाम करती भईं। श्री प्रभु के कर कमलों से सपरिकर बीरा पाय प्रसन्न भईं। उसी समय में शयन भवन की सहचरी पुष्प-सदन में पुष्पसज्या आदि साज सम्हारि के आईं। और प्रणाम करि कर जोरि के खड़ी भईं, तब प्रभु सबों की ओर कृपा दृष्टि कर श्री सियाजी सहित उठ कर चल दिये और सब समाजन श्री प्रभु रुचि जानि प्रणाम आशीर्बाद कर कर निज २ सदनों को जाते भये। केवल मुख्य परिवार श्री भरत लक्ष्मणादिक चँवर छत्रादि लिये शयन कुंज (शाला) को पधारे। आय के शयन भवन के प्रथम आवरण के सिंहासन में श्री रघुबर जनक-किशोरी जी बिराजीं। श्री भरतादिकों के कर कमलों से सखी वर्ग चँवर छत्रादि लेती भईं। श्री भरत लक्ष्मणादि भ्राता श्री प्रभु की आज्ञा पाय प्रणाम कर विश्राम करने को पधारे। श्रीयुगल सरकार मुकुट चन्द्रिकादि भूषण उतार के फूल बँगला के मध्य में पुष्प सज्या पर आ विराजे और श्री मुख प्रक्षालन कुल्ला कर शयन करते भये। तब श्री भक्ति चारुशीला जी और भावुक जन तथा सखी गण प्रणाम कर के शोभासिन्धु की शोभा हृदय में धर के बाहर निकल आये। कपाट बन्द कर दिये, साधक गर्मी के ऋतु में बाहर बैठ के पुष्पझालर रचित पंखा की रेशम डोरी खैंच के श्रीप्रभु को पवन करने लगा और सप्रेम नाचगान पूर्वक प्रभुशोभा का चिन्तवन करने लगा। तथा जाड़े के ऋतु में श्रीदिव्य गुणसिन्धु जी की सुशीलता, कृपालुता, वात्सल्यता, उदारता, क्षमा, शान्ति, सुलभता, मृदुता, मैत्रीपालकता, स्वजन-दोष विस्मृती, सर्वज्ञता, कृतज्ञता, रसज्ञता आदि दिव्य गुणावली सुगुणसीमा भक्तजी के मुख से सुनता गुनता भया। श्रीनामस्मरण करता है। पुनः श्रीजानकीकान्त रामकान्ता जी को जागरण

जानि उत्थापन सेवा सामग्री किंकरी वर्गों से लिवाये साधक को संग लेके श्रीभक्ति रामरञ्जना जी श्री प्रभु के पास प्राप्त भयीं। श्रीयुगलचन्द्र को चौकी पर विराजमान कराय श्रीभक्तिसिद्धा जी और साधक श्रीयुगल पदकंज धोय करकंज प्रोक्षण कराय ऋतु के अनुकूल दिव्यफल मेवा-मिठाई खवाय शरबत श्रीसरयूजल पिवाय पुनः श्रीमुखों को पोंछि दिव्य पान बीड़ा खवाये। तदु-परान्त केश अलकावली सुधारि जैसे प्रथम शृंगार कहा गया है। तैसे ही वस्त्र-भूषण धारण कराय पुष्पहार पहिराये। तब श्रीसीतारामचन्द्रजी सभा सिंहासन पर आकर विराजे। परिकर वर्ग,छत्र-चवँर व्यंजनादिक ले के खड़े भये। अनुरागीजन पूर्ववत् आरती कर पुष्पांजली दे प्रदक्षिणा प्रणाम कर के छवि अवलोकन लगे। इसी समय श्रीभरतलाल आदिकों के पठाये एक मधुर सखा आये, सप्रेम प्रणाम कर कर जोरि खड़े भये। तिन्हें विलोकि के श्रीरघुराजकिशोरजी भक्तिजी से बोले, "हे भावरूपे! श्रीभरतादिक भ्राता आये हैं।" श्रीभक्ति जी कहती हैं, हे श्रीस्वामिशीलनिधे ? अति आनन्द भया यों कह द्वार पर जाय अपार दुलार से लिवाय लाईं। श्री भरतादिक आ के निज २ नामोच्चारण पूर्वक जैसे सर्वतोष सभा में किये रहे तैसे ही साष्टांग प्रणाम किये। तब श्री आनन्दकन्द उठके सबों को हृदय में लगाये। पुनि सब कोई श्रीस्वामिनी चरणों में शिर स्पर्श कर श्री कर कमल स्पर्श पाय यथा योग्य विराज गये। तब सेवानुरागी भी सब प्रिय वर्गों के पदों में मस्तक धरि प्रणाम किया और श्रीरघुबीरकिशोर जी के हाथों में धनुषबाण धारण करा दिया। तेहिं अवसर में गुणी गायक आय सद्गुण सिन्धुजी के गुणानुवाद गान किये और नृत्यकार नृत्य करने लगे। निज २ अभिलाष ते अधिक वस्त्र विभूषणादि निछावर पाये। तब भैया श्री भरतलालजी कर कमल जोरि आज्ञापाय श्रीकृपासिन्धु बन्धुजी से बोले हे श्रीसुख

सिन्धु बन्धु जी श्री महाराजाधिराज पिता जी के दरवार दर्शन की बेला भई। सो सुनि श्री प्रभुजी ने कहा कि चलना चाहिये। हे श्री निमिराजकिशोरी जी आप श्री अम्बावर्गों के अभिवन्दन को जाओ। ऐसा श्रीप्राणनाथजी का अनुशासन सुनि समाज सहित अन्तःपुर भवन में जाय श्रीमाण्डवीजी, श्रीऊर्मिलाजी श्रीश्रुतिकीर्तिजी आदिकों से मिल के और उन्हें संग लिवाय पालकिन पर चढ़ि श्री बड़ी अम्बा साहब के समीप में जाय पद पंकज अभिवन्दन कर अभिमत आशिष पाय गोद में बैठती भईं। पुनि आज्ञा पाय श्री कैकेयी अम्बा, श्रीसुमित्रा अम्बा आदिकों के महलों में जाय अभिवन्दन करि वत्सलसुख सरसाय पुनि श्री बड़ी अम्बा श्रीकौशल्या देवीजी के महल में आय विराजीं। और यहाँ श्री लखनलाल जी की आज्ञा पाय कै सिंह-द्वार पर यह चतुरंगिणी सेना नर्म प्रिय सुहृद सखा सलोने तथा श्रीसुमुखजी, श्रीसुमतिजी, श्रीसुलोचनजी, श्रीसुमानसजी ये चारों श्रीसुमंत सुत श्री महाराज कुमारों के चारों रथ उपस्थित करते भये। श्रीप्रभुजी श्रीसिंहासन से उठके समाज सहित मन्द २ पधारे। श्री रामानुगाभक्ति जी पुरुष वेष करिके छत्र लेती भईं। और सख्यसेवा सुखस्वादि जन चँवर लिये। दूसरा चवँर श्री चारुशील मणिजी लेते भये। इसी प्रकार सब सखा दास वर्ग व्यजन, पानदान, अतरदान, पीकदान, जलझारी, जलपान सामग्री इत्यादिक अपनी २ सेवा लैके सुख संयुक्त चलते भये। श्री अयोध्याधिपराजेन्द्र किशोर जी सानुज सिंहद्वार पर आये। सब कोई प्रणाम जोहार किये चारों भाई यथोचित ग्रहण करि के रथों पर सवार होके सहित समाज श्री चक्रवर्ती जू महाराज की सभा समीप आय रथों से उतर के चारों भाई आय के प्रणाम किये श्री महाराज जी हृदय में लगाय के शिर आघ्राण (सूंघि)करिके दक्षिण भुजा के समीप श्रीरामभद्रजी श्रीलक्ष्मणजी को वाम भुजा

ं निकट श्रीभरतजी श्रीशत्रुघ्नजी को बैठाय के परम प्रेम से श्रीमुख चन्द्रों को निहारि नवल ब्रह्मानन्द लेते भये पुनि परम प्रेम पूरित पूछने लगे, लालन ब्रह्मर्षि वरिष्ठ श्रीगुरु बसिष्ठजी के दर्शन को जाते हो कि नहीं ? सांगोपांग सरहस्य धनुर्वेद देखते हो कि नहीं ? ब्राह्मणों को आगे से प्रणाम करि सम्मान सहित दान देते हो कि नहीं ? अपने भ्राता सखावर्गों के संग ही भोजन करते होकि नहीं ? अपने बीरवर्गों को सन्मान प्रीतिदान देते हो कि नहीं ? ऐसे वात्सल्यरसामृत मिले बचन सुनि के श्री आर्य्य बल्लभजी करजोरि के बोले हे श्रीमहाराजजी श्रीमान्जी का अनुशासन सदा ही करता हूँ और भरतादि प्रिय भ्राताओं से कहि के करवाता हूँ, इस प्रकार के विमल बचनामृत श्रवण करिके श्रीमहाराजजी परमानन्द को प्राप्त भये। तदनन्तर श्रीराघवेन्द्रजी श्रीलखनलालजी की ओर देखे, तब श्रीमहाराजजी इच्छा जानि के कहते भये ज्येष्ठलाल जी बागबिहार की इच्छा होय तो जाओ। ऐसी आज्ञा पाय प्रेम पूर्वक सहोदर सखान संयुत प्रणाम कर के पधारे । प्रीतिपूर्वक परस्पर हास्य विनोदवार्त्ता करते भये तुरङ्गशाला में आय तुरंगों को देख पाणिपंकजों से पोंछि श्री मुख पंकजों से पुचकारि परमानन्द देते भये। अश्व सेवकों को अश्वसेवा सिखा के आप गजशाला में गये वहाँ गजेन्द्रों को देख पुनि रथशाला में आय रथों के बाजि वृन्दों को विलोकने लगे। तब सुवर्णमणि साजों से सजे हुए खास सवारी के घोड़ों के पास आये। जिनके आगे श्री अवधेश नन्दनजो का मनोज-मोहन नाम का घोड़ा शोभित है। तिसके पीछे श्रीभरतलालजो का बिजयविनोदो नामक, तिसके पीछे श्रीलखनलालजी का मानसानुगामी नामक तिसके पीछे श्रीशत्रुघ्नलालजी का रणरंगी नामक तुरंग सुशोभित है। तिसके पीछे हजारों घोड़े खड़े हैं। प्रथम श्रीरामलालजी निज घोड़ों पर सवार हुए। पुनि श्रीप्रभु

आज्ञा पाय २ निज २ घोड़ों पर श्रीभरतादिक समस्त रघुवंश। कुमार सवार हुए। और सख्यसुख सागरजी के दक्षिण वाम पृष्ठ भाग में होके विलम्बित गति से चलि के अनन्त श्रीचक्रवर्ती जी के अष्ट भ्राताओं के द्वार पर आये। तिन्हके नाम श्रीवीर सिंहजी १, श्रीसूरसिंहजी २, श्रीरत्नभानुजी ३, श्रीसिंहजी ४, श्री चन्द्रशेखरजी ५, श्रीजयशीलजी ६, श्रीविजयसिंहजी ७, श्रीप्रति-पाम्निजी ८। ये आठों श्रीअजय महाराज के लघुभ्राता श्रीसुव्रत जी के पुत्र हैं। और श्रीरामचन्द्रजी के पितृव्यकाका हैं। इन ही के सब पुत्र श्रीरघुनन्दनजी के मित्र हैं। जिनसें ज्येष्ठ २ आठों महामुख्य मित्र हैं। वहाँ पर उतर के वात्सल्यरसवारिधि श्रीवीरसिंहजी के गृह में गये। श्रीकाका साहबजी लेने आगे आये। आप सबन्धु प्रणाम किये, आर्य्यजी सानन्द आशीर्वाद देके भीतर लेगये। इन महाराज की पत्नी श्रीरतनकलाजी परम प्रीति से ललकि के चारों लालन को यथोचित आसनों पर बैठाय सहित समाज का परमसत्कार किया। मधुर मेवामिठाई खवाय जल पिवाय श्रीमुखों को पोंछि पानबीरा अतर दे माला पहिराय आरती निछावर कर बलैया लैलै बदन बिलोकने लगीं। श्रीराम पितृव्यजी के भवन में छोटे बड़े नारि पुरुष सब कोई सखा सहोदर संयुत श्रीरामलाल शोभासिन्धु की छबि देख अति ब्रह्मानन्द सुख को पाये। तब श्रीशीलसिन्धुजी बोले कि अब आज्ञा मर्जी होय तो और सबों के यहाँ भी जाना है, सुनि के वे बोले लालासाहब जाने को कैसे कहा जाय, किन्तु पधारिये सबको आनन्द दीजिये यह सुन उठ के यथोचित प्रणाम जोहार करके पधारे। इसी प्रकार सबों के गृहों में जाय २ आनन्द दे के श्री प्रमोदवन में आये, जहाँ पंच वाटिकाओं का विभाग है। मध्य में श्रीचक्रवर्तीबाग है, उसके दक्षिण में श्रीरामबाग, तिसके दक्षिण में श्रीलक्ष्मणबाग और उत्तर में श्रीभरतबाग तिसके उत्तर में श्री

शत्रुघ्न बाग है। इन पाँचों बाटिकाओं में विहार कर वृक्ष बेलि फलफूलों की रमणीयता विलोकि बागवानों से फूलमाला फल मेवादिकों की डालियाँ ग्रहण कर सबको परमानन्द दिये । पुनि तहाँसे श्रीसरयूकूल आये जहाँ कई कोशों तक समसुभग भूमि में हरी हरी दूब लगी है। जहाँ तहाँ दिव्य वृक्ष लगे हैं, चबूतरा बँगला बैठक बने हैं, तहाँ कन्दुककेलि कवाइद व्यूहबन्धन बाजियों को विविध गति देखना दिखाना। लक्ष्यबेधनादि अर्थात् निसाना चाँदमारी इत्यादिक नाना क्रीड़ा करते भये। पुनि तुरंगों से उतरि के कर पद श्रीमुख धोय २ मेवादिक खाय जलपान करि सबकोई बीड़ापान पाय पश्चात् श्रीभरतलालजी की आज्ञा पाय दिव्य सुवर्णमणि भूषणों से सजे दिव्यजरतारी झूलें पड़ीं मणि-जटित सुवर्णों के हौदा कसे शत्रुञ्जय आदि गजराजों के वृन्द आये। शत्रुञ्जय के ऊपर श्रीरघुबीर और श्रीलखनलालजी चढे। श्रीहनुमानजी पीछे खवासी में बैठ के श्वेत छत्र धारण किये और प्रभु के पीछे श्रीलखनलाल जी चँवर ढोरने लगे। तथा दूसरा चँवर आगे पीलवान लिया। रिपुञ्जय गज पर श्रीभरतलालजी श्रीशत्रुघ्नलालजी चढ़े। अन्य गजों पर सखागण चढ़िके चलते भये। श्रीअवधराज मार्ग में प्रभु की सवारी आई, आतेही सम्पूर्ण श्रीअवधजन मात्र महामनोहर अनूपरूप अवलोकन कर के आरती निवछावर लाजा धानकालावा फूलों को वर्षा आशीर्वाद प्रणाम जोहार जय जयकार करते भये। सानुज श्रीरघुनन्दनजी ब्राह्मणों को प्रणाम कर कुशल पूँछ सबों का यथोचित सन्मान करके श्रीराजद्वार पे आये। वहाँ पर हाथियों से उतर के ताम-जाम तथा तामदानों पर सवार हो और सब लोगों को विदाकर मुख्य सखाओं को साथ लैके ज्येष्ठा अम्बा श्रीकौशल्या महारानी के महल में आये। मातावर्ग पुत्रों का आगमन सुनि सानन्द च सामग्री सुधारि मंगल द्रव्ययुत थार हाथों में लिये आ के

आरती कर आशिष दै २ बलैयाँ लै २ सवारियों से उतारि हृदय में लगाय मुख चुंबन कर समाज सहित चारों पुत्रन को सुन्दर आसनों पर बैठावती भईं। पुनि मंजु मेवा खवाय जलपान कराय मुख पोंछि पानबीरा खवाय पुष्पमाला पहिराय संध्या आरती करती भईं। पुान बैठ के बारम्बार बदन बिलोकती है। उसी समय श्री चक्रवर्तीजी महाराज आये। सब कोइ उठ खड़े हो सखन सहित चारो भाई प्रणाम करते भये। श्रीमहाराजजी प्रिय पुत्रों को आशीर्वाद दे हृदय लगाय श्रीरामलालजी को गोदी में ले के सिंहासन पर विराजे। श्रीकौशल्याजी, श्रीलखनलाल को अङ्क में ले के महाराज के दाहिने विराजीं। श्रीकैकेयीजी श्रीशत्रुघ्नलाल को लेके श्रीमहाराज के बाम दिशि बैठीं, श्रीसुमित्रा माता श्राभरतलाल को लेके, बड़ी अम्बा के दाहिने बिराजी। अन्य सब सखा वर्ग श्रीमहाराज के दाहिने बैठ गये। तथा सम्पूर्ण माता श्रा कैकेयी माता के बायें बैठ गईं। इस वात्सल्य-विनोद सभा को महारानी श्रीसीता आदि बधू वर्ग झरोखों से सुख संयुक्त देखता हैं। श्री महाराज के आगे नाच गान नाटक हास्य कौतुक विनोद माताओं की किंकरी वर्ग करने लगीं। पश्चात् पहर भर रात जाने पर सभा उठी श्रामहाराज पुत्रों का प्यार दुलार करके वियारी को गये। श्री रघुनन्दनलाल को बन्धु सखाओं के संयुत श्री कौशल्यादिक अनेक माताऐं ब्यारु कराती हैं। ऐसे ही श्रा जनकललीजी की भगिनी सखिन संयुत चारों वधुओं को श्रीसुमित्रा आदिक अनेक सासुऐं बियारी कराने लगी। प्यार दुलार प्रेम प्रमोद से वियारी कराय अँचवाय के पानबोरा खवावती भईं। पुनि श्रीरघुनन्दन जनकनन्दिनीजी को एक सिंहासन में विठाय दाहिने तीनों पुत्रों को बैठाय तथा बायें में तीनों बहिनी श्रीमांडवी जी, श्रीउर्मिला जी, श्रीश्रुतिकीर्ति जी को बैठावती भईं। इस प्रकार आठों स्वरूपों की शोभा देखि

नेत्रों का सुन्दर फल लै के आरती कर बारम्बार बलैयाँ लै लै न्यौछावर कर कर आशिष देती हैं। पुनि कुछ आलस सहित शोभा देखि के शयन करने को बिदा करती भईं। अम्बाओं की आज्ञा पा के समाज समेत चले। श्रीरघुबरजी के दहिने सब भाई श्रीजानकीजी के बायें सब बहिनी चलि के श्रीसीताराम भवन में आये। तहाँ श्रीरघुनंदन ने सब भ्राताओं को तथा जानकी जी ने सब भगिनन को आज्ञा दी। तब सब प्रणाम कर २ आशिष पाय २ निज २ महलों को गये। श्रीदिव्य दम्पतीजी पर्यङ्कपर बिराज के सभा के विभूषण उतार शयन भूषण धारण किये। तब श्रीरामानन्ददायिनी जी शयन भोग दाख अंगूर सरबत दूध मलाई आदिक लाईं। श्रीरामानुरागीजन प्रभु को खवाया। श्रीभक्तिजी श्रीसियाजी को खवाय श्रीयुगल को जल पिवाय श्री मुख प्रोक्षण करि पानबीरा खवाय अनुरणी के कर से आरती कराय समाज युत प्रणाम करती भईं। तब श्रीरामरसरङ्गविहारी जी शयन करते भये। वाम भाग श्रारसिकराज बल्लभाजी शयन करती भईं। श्रीभक्ति भक्त दोनों दिव्य विग्रहों को चरण सेवा करने लगे। तदुपरि श्रीयुगल के नयन पंकजों को निद्रा से मुद्रित देखि समाज सहित श्रीभक्ति परानुरक्ति जो श्रीयुगल कृपालु की सुन्दर शोभा मन में धरि मन्द पदों से बाहिर निकसि कै कपाट बन्द कर देती भईं। और समाज सहित शयन शाला के आवरण भवन में विराज कै झींने स्वर से विहागराग में श्रीयुगल यशगाने लगीं। तदनन्तर शयन कर के स्वप्नावस्था में श्रासीतारामचन्द्रजो के समीप प्राप्त भईं। तब सेवानुरागी साधक भी श्रीभक्ति पदपंकजों की साष्टांग प्रणाम करि उनके नीचे दक्षिण में शयन कर स्वप्न में श्रीसीतारामचन्द्र जो के समीप प्राप्त हो श्रीयुगलमाधुरी सुख सिन्धु में मगन हो गया। इस प्रकार श्री स्श्रीरघुवामिनी तथा नन्दन कृपालु जी की कृपा से श्रीसीताराम

रहस्योपासक स्वामी श्रीनाभाजी कृत अष्टयाम सेवानुसार यह श्रीसीताराम मानसी पूजा (अष्टयाम भावना) पूर्ण भई ॥

अब इस पूजारीति के अन्तर्गत षट् ऋतुकालीन उत्सवों तथा सेवा की अति संक्षेपता का अनुबाद करते हैं।

श्रीराममानसी सेवा निरत जन को गरमी और जाड़ा के ऋतु अनुकूल सामग्री का चिन्तवन अवश्य करना चाहिये। जैसे गरमी केऋतु में फूलों के भूषण फूलों की सेज्या फूलों का बॅगला और महल के छत पर फूल बँगला में ही शयन का ध्यान करना चाहिये। और शीतलचंदन का अंगराग अनुलेपन गुलाब का अँतर गुलाबजल के फुहारे स्नान पान में परम शीतल श्रीसरयूजल सरवत और भोग में दधि शीतल व्यंजन शीतलफल मेवादिक सब शीतल पदार्थ मानसी में तथा प्रत्यक्ष में श्रीसीता-रामचन्द्र जी को अर्पण करना चाहिये। और जाड़ों की ऋतु में शीतल पदार्थ ध्यान में अथवा प्रत्यक्ष में कभी समर्पण न करना चाहिये। किन्तु पुष्पमाला तथा पुष्पांजली में यों करैकि जूही के सूक्ष्म माला तुलसीदल के गुच्छा लगे भये पहिरावै तथा फूलों के गुच्छा सुंघावैं और उसी की पुष्पांजली देवे। मन में यों बिचारे कि ये पुष्प प्राकृत ठंडे नहीं हैं, दिव्य प्रभु की रुचि अनुकूल हैं। वस्त्र ऊनी रेशमी रुइदार निवेदन करै। जल अति शीतल न पियावै, स्नान आचमन आदि गरम जल से करावै। धूम रहित सुगंधि सहित अग्नि समय २ में तपावै। और भोग गरम पुष्ट पदार्थों का निवेदन करे। तात्पर्य यह है कि जो जो पदार्थ शीतकाल में अपने को प्रिय अनुकूल हो, सो सो प्रभु को भी अर्पण करे। और जाड़े में आरती के समय श्रीहनुमन्तलाल के हाथ में (व्यंजन) पंखा का ध्यान न करना चाहिये। पानबीड़ों से भरा पानदान सुवर्ण के संपुट में लिये अथवा कर जोरि के स्तुति करते ध्यान करना। और श्रीभक्तिजी

के कर में दिव्य दर्पण का ध्यान करना। इस प्रकार ऋतु भेद से पूजा पदार्थों का भेद वर्णन भया। अब नित्य पूजा में नैमित्तिक उत्सव मिश्रित भावना संक्षेप से कहते हैं।

चैत्र मास में चारों भाई श्रीरघुनन्दनजी के जन्मवर्षोत्सव बधाई छठी बारहों का चिन्तवन करै। वैसाख शुक्ल ९ नवमी में श्रीजानकी जन्मोत्सव वर्षगाँठ बधाई छठी आदि का चिंतवन करना। ग्रीष्म ऋतु में भोजन शयन सभा सब पुष्प भवनों के भीतर ध्यान करना। वर्षाकाल में साम को चार बजे रात्रिपर्यन्त सहित समाज प्रभु के डोलाउत्सव, झूलाझूलने का दृश्य श्रीप्रमोदबन में चिंतवन करना। भाद्रशुक्ल एकादशी से पूर्णिमासी तक नौका में झूला जल विहार का चिंतवन करना। सरदऋतु चाँदनी निशा में सहित श्रीभरत, श्रीलक्ष्मण, श्रीशत्रुघ्न, श्रीसीतारामचद्रजी मध्य सिंहासन पर विराजे ऐसा ध्यान करै। तिनके चारों ओर सखी समूहों का गाना बाजा नाना गति से नाचना तथा रासमंडल का ध्यान करे। तदुपरान्त श्रीभरतादि बन्धु सखा समाज संयुत चाँदनी निशा में चंद्रमणि चौक में तस्मै खीर मलाई आदि पदार्थों का भोजन वियारी करने का ध्यान करना। मार्ग शीर्ष शुक्ल पंचमी से पौषकृष्णद्वितीया तक श्रीरामविवाह लीला गौना उत्सव दूलह दुलहिन वेष का ध्यान करना। माघ शुक्ल पंचमी से चैत्र कृष्णरसरङ्ग पंचमी तक श्रीरूपसखी जी आदिकों की कथित रीति से पहरदिन बाकी से संध्यातक नित्य होलिका-केलिलीला का चिंतवन करना इत्यादिक उत्सवों को मिलाय के जितनी चित्त की स्थिरता होय जितने समय तक मन लगे तितना मानसी पूजा का ध्यान करना ही महामोद मंगल का हेतु है। अब कदाचित किसी भक्तिभावुक को कथित भावना करने का समय न मिलै तिसके लिये अति संक्षेपता से पूजा मात्र कहते हैं।

प्रथम कथित रीति से प्रभात उत्थापन जागरण जय जयकार शब्द प्रणाम आदिक करि के मङ्गल थार आगे धरै। और पुष्प-माला पहिराय कमल पुष्प सुंघाय के मङ्गल थार में धरे भये मधुपर्क मेवा फल आदिकों का केवल दृष्टि भोग अर्पण कर पूर्व कथित रीति से मङ्गल आरती कर के पुनि उसी भाँति दन्त-धावन करावै। तब श्री रघुनन्दन जी कहते भये, हे प्राण प्रिये! स्नान करो। सो सुनि स्वामिनी जी मन्द बिहँसि सखिन सहित स्नान कुंज को पधारीं। तब उपरोक्त रीति से श्री प्रभु जी स्नान सन्ध्यादि कर शृङ्गार धारण कर के प्रिया प्रीतम दोनों एक संग आ विराजे। उसी समय तीनों भ्राता और श्री हनुमानजी मय दास सखाओं के आय यथोचित प्रणाम कर के विराजे। पूर्व कथित रीति से सब कोई भोजन आचमन कर ताम्बूल ग्रहण कर के तदनन्तर श्री युगल प्रभु सभा सिंहासन में आय विराजे। श्री लक्ष्मणादिक उसी भाँति छत्र चँवर आदि ले के खड़े भये। पूर्व रीति से महा आरती भई। आगे नाच गान होने लगा। श्री भक्ति जी सहित साधक श्री प्रभु की आज्ञा से श्री प्रभु प्रसा-दामृत पाय के श्री प्रभु जी के समीप आये। इसी राजसभा में श्री सीताराम माधुरी शोभा को अवलोकन करते विमल व्यजन से पवन करते खड़ा रहे। अथवा कर जोरे शोभा देखते बैठ रहे। पुनः जब इच्छा होय तव पूर्व कथित रीति से शयन कराय देवे। फिर उसी प्रकार उत्थापन जलपान शृङ्गार कराय सभासिंहा-सन में विराजमान करे। श्रीलखनलालजी छत्र श्रीभरतजी श्रीशत्रु-घ्नजी युगल चँवर एवं श्रीहनुमानजी व्यजन लिये अन्य सखा सखी दास वर्गों से सेवित नृत्य देखते सुयश गान सुनते भये अनन्त श्री सीतारामचन्द्र जी को मानसिक नेत्रों से देखता रहे। पुनः रात्रि में प्रथम कथित रीति से समाज सहित श्री युगल कृपालजी बियारी भोग अर्पण कर आरती कर के शयन कराय देवे।

और श्री भक्ति जी के पर्य्यङ्क के नीचे आप हूँ श्री नाम स्मरण करता हुआ शयन करै। इतनी भावना पूजा मात्र है, जो अष्ट-काल पंचकाल में सम्पूर्ण भावना करने का समय अवकाश न मिले या चित्त स्थिर न होय तो इतना हूँ कर लेना परम सुख सुमङ्गल का हेतु है। और समस्त भावना का ध्यान तो परमोपा-सकों का धन जोवन प्राण ही है। अथवा यह सेवा मनुष्य जन्म का महाफल रूप परम मोक्ष का परम हेतु है। ताते श्रीसीताराम रसिक उपासकों से एवं परमोदार दानि शिरोमणि श्री रघुबंश बिभूषण प्रियतम जी तथा श्री रघुनन्दन बल्लभा जी से यही बरदान माँगते हैं कि मैं प्रेम नेम मनोल्हाद सहित यह मानसी पूजन मेरे से सदा कराइये। हे प्रभो ? हम आप ही के कृपा दृष्टि से देखिये और निज रूप देखाइये, अपनाइये ! अपनाइये !! अपनाइये !!!

दोहा—जय २ श्री भगवन्त मम, सीतापति सुखदानि।
दीजिय यह सेवा सरस, शरणागत जन जानि ॥१॥
जय श्री सिय रघुनन्द जय, भरत लखन रिपुसाल।
जय हनुमत गुरु भक्ति जय, करिये कृपा कृपाल ॥२॥
गोस्वामी तुलसी भणित, भव निधि पार उतार।
जेहिं पढ़ि रघुबर नाम रटि, बस्यों अवध आगार ॥३॥
चित्रकूट दक्षिण दिशि, योजन पंच प्रमाण।
ग्राम रामपुर जन्म द्विज, दीन्हें राम सुजान ॥४॥
बीस वर्ष वय में कृपा, करि श्री अवध बुलाय।
सीताराम प्रपन्न जन, कीन्हे सख्य गहाय ॥५॥
श्री रामानन्दीय गुरु, कामदेन्द्र मणि देव।
मन्त्र राम तारक दिये, सख्य दास्य रस सेव ॥६॥
बाहिर पूजा राम की, नवधा भक्ति निदान।
मानसि सेवा प्रभुन की, प्रेमा परा प्रमान ॥७॥

श्री युत स्वामी अग्र कृत, ध्यान मंजरी ध्मान।
श्री स्वामी नाभा भनित, अष्टयाम मम प्रान ॥८॥
सम्बत शत उनईश गत, साठ (१९६०) अयोध्या थान।
माधव शित जानकि नवमि, पूरण पूजा ध्यान ॥९॥
सखा राम रस रङ्गमणि, सीताराम प्रपन्न।
विरच्यो पूजा मानसी, सुमति छुधा को अन्न ॥१०॥

इति श्री रामानन्दीय श्री स्वामी राघवेन्द्र सखा सुहृत श्री कामदेन्द्रमणि कृपा पात्र श्री सीताराम शरण श्रीरामरसरङ्गमणि विरचिता लोक भाषायां श्री सीताराम मानसी पूजा अष्टयाम भावना समाप्ता ॥

अथ आरती

मङ्गल आरति सिय रघुबर की। कीजै कलुष अमङ्गल हर की ॥
मङ्गल श्याम गौर तन शोभा, मङ्गल लोचन लखि मन लोभा,
मन्द हँसनि मङ्गल सुख गोभा, मंगल मुखन अलक लट धर की ॥१
मंगल मय बहु बाजन बाजै, मंगल चँवर चलत सुख साजै,
मंगल छत्र युगल शिर छाजै, जय धुनि मंगल सिन्धु लहर की ॥२॥
मंगल शुभ प्रदक्षिणा करि २, मंगल पुष्प अंजली झरि २,
मंगल पद बन्दन महि परि २, निरखि नयन भरि छबि छबि-
धर की ॥३॥ मंगल पूजा सिय सिय बर की, मंगल करनि
युगल परिकर की, मंगल भक्ति प्रेम मुद भर की, लहु "रस रङ्ग-
मणी" प्रभु पर की ॥४॥

आरति हर की आरति कीजै, शोभा निरखि नयन फल लीजै,
चरण कमल नख नूपर राजैं, तदुपरि वसन विचित्र बिराजैं,
कटि केहरि कल किंकनि बाजैं, नाभी त्रिबलि उदर मन दीजै॥१॥
उर आयत बहु भूषन भ्राजैं, बाहन अङ्गद कङ्कण छाजैं,
कर धनु शर जन रक्षण काजै, सिय कर कंज सुकंज अमीजै ॥२

शिरन किरीट चन्द्रिका सोहैं, कुण्डल करनफूल चित पौहैं,
लखत चन्द्रमुख चन्द्र विमोहैं, विहँसनि मन्द जोहि युग जीजै ॥३
श्याम गौर राजीव विलोचन, सुखमा सिन्धु सुखद मन रोचन,
सीताराम चरण भव मोचन, भजि 'रसरङ्गमणी' रस पीजै ॥४॥

॥ इति मंगला आरती तथा महा आरती समाप्ता ॥

❀ अथ श्रीवाग्विजयाधिपाचार्य स्वामिकृतं श्रीरामप्रेमाष्टकंप्रारम्भः ❀

हे रामचन्द्र करुणाकर दीनबन्धो, हे राघवेन्द्ररघुनन्दन राजराज,
हे जानकीश जनरञ्जन कोशलेश, स्मर्तुर्निगृह्य हृदयं मम देहिदास्यम्
हे रावणान्तक दयाकर वारिजाक्ष, ब्रह्मादिदेवमुकुटार्चित पादपद्म
हे लक्ष्मणाग्रज दयाकर शान्तमूर्त्ते, स्मर्तुर्निगृह्य हृदयंमम देहिदास्यम्
हे राजपुत्र सुखसागर श्रीनिवास, हे वेदवैद्य पुरुषोत्तम ज्ञानगम्य ।
हे सत्यसन्ध भरताग्रजशीलसिन्धो, स्मर्तुर्निगृह्यहृदयंमम देहिदास्यम्
हे भक्तवत्सल कृपाकर राक्षसारे, हे अञ्जनातनयहृत्कमलाधिरूढ़ ।
हे शत्रुतापनभवार्त्तिहरावतार, स्मर्तुर्निगृह्य हृदयं मम देहि दास्यम्
हे तात सत्यपरिपालक पादपद्मादारण्य मार्गगमनोत्सुक धर्मनिष्ठ ।
हे शेषसेव्य विमलानन पूर्णचन्द्र, स्मर्तुर्निगृह्य हृदपं मम देहिदास्यम्
हे चित्रकूट गिरिगह्वर राजसिंह, हे धर्मपाल मुनिमानसराजहंस ।
हे इन्दिरारमण सायकचापहस्त स्मर्तुर्निगृह्य हृदयं ममदेहि दास्यम्
हे मैथिलीविरहभञ्जन सेतुकारिन, हे रावणानुजमनोरथ कल्पवृक्ष ।
हे देवतापपरिमोचन विष्णु मूर्त्ते, स्मर्तुर्निगृह्यहृदयं मम देहि दास्यम् ।
हे ब्रह्मनिष्ठगुणकर्मविभिन्नमूर्त्ते, हे बोधबोधित प्रबोधित बोधरूप
हे भावगम्य सनकादिमनः प्रबोध, स्मर्तुर्निगृह्य हृदयं ममदैहि दास्यम्
यःपूर्णंपुण्यसुकृती गुरुभक्तिनिष्ठो, रामाष्टकं पठति व्याससुतप्रणीतम्
हित्वा गुणात्मकमिदं सुखदुःखहेतुं देहं प्रयाति रघुवर्य्यपदारविंदम्
श्रीवेदव्यासभट्टस्यपुत्रोवाग्विजयाधिपः । वेदाचार्याग्रयनामाचतेने
दंह्यष्टकंकृतम् ॥ इति श्री रामाष्टक समाप्तम् ।

विजयध्वज श्रीमारुति स्तोत्रम्

प्रपन्नानुरागं प्रभाकाञ्चनागं जगद्गीतशौर्यं तुषाराद्रिधैर्यं ।
तृणीभूतहेतिं रणोद्यद्विभूतिं भजेवायुपुत्रं पवित्रात्पवित्रम् ॥ १ ॥
भजे हेमरंभा वने नित्यवासं भजे बालभानु प्रभाचारुहासम् ।
भजेचन्द्रिका कुन्द मन्दार हासं भजे संततं रामभूपालदासम् ॥२॥
भजे लक्ष्मण प्राण रक्षा सुदक्षं भजे तोषितानेक गीर्वाण पक्षम् ।
भजेघोर संग्राम सीमाहताक्षं भजेराम नामानि संप्राप्यदक्षम् ॥३॥
मृगाधीशनाथं क्षिति क्षिप्त पादं घनाक्रान्त जंघं कटिस्थोडुसङ्गम् ।
अजाणुस्थकेशं भुजाश्लेषिताशं जयश्रीसमेतं भजेरामदूतम् ॥४॥
चलद्बालघाताद्भ्रमच्चक्रवालं कठोराट्टहासात्प्रभिन्नाब्जमण्डम् ।
महासिंहनादाद्विशीर्णं त्रिलोकं भजे वाञ्जनेयं प्रभुंवज्रकायम् ॥५॥
रणेभीषणे मेघनादे सनादं सरोषं समारोष्य सौमित्रिमंसे ।
घनानां खगानां सुराणाञ्च मार्गे नटन्तं ज्वलन्तं हनूमन्त मीड़े ॥६॥
नखध्वस्त जंभारिदम्भोलिधारं भुजादण्ड निर्धूत कालोग्रदण्डसू ।
पदाघातभीताहि जाताधिवासं रणक्षोणिदक्षं भजेपिंगलाक्षम् ॥७॥
महाभूत पीड़ां महोत्पात पीड़ां महाव्याधि पीड़ां महाधि प्रपीड़ाम् ।
हरत्याशु ते पादपद्मानुरक्तिर्नमस्तेकपि श्रेष्ठ रामप्रियाय ॥८॥
सुधासिन्धुमुल्लंघ्य सायं निशीथे सुरान्तः प्रगुप्तां सुधामौषधिस्थाम्
क्षणाद्द्रोणशैलेयसारेण नेतुं विनात्वांभवेत्कः समर्थः कपीन्द्र ॥९॥
समुद्रं तरङ्गातिरौद्रं विनिद्रो विलंघ्योरु जङ्घः स्तुतोमर्त्यसङ्घैः ।
निरातङ्कमाविश्य लङ्कां विसङ्को भवानेव सीतावियोगापहारी ॥१०॥
रमानाथ रामं क्षमानाथरामामशोके सशोके सशोकां विहाय ।
वनंतद्घनं जीवनं दानवानां विपाट्य प्रहृष्यन् हनूमँस्त्वमेव ॥११॥
जनेहारयन् भूरि पीड़ांशरीरे निरूढां रणारूढ़ गाढ़प्रताप ।
भवत्पादभक्तिं भवद्भक्ति रक्तिं कुरु श्रीहनूमन् प्रभूतां दयालो ॥१२॥
नमस्ते महासत्यवाहायतुभ्यं नमस्ते महाकाल कालायतुभ्यम् ।
नमस्ते महाशौर्य्य शौर्य्याय तुभ्यं नमस्ते महावज्र देहायतुभ्यम् ॥१३॥

श्रीअवधराज पुत्रन प्रमोद मय मुदित सदा सुख पाते हैं।
श्रीसीतापति पद सरोज विमुखन घर कभी न जाते हैं॥
विधि निषेध मतवाद छाँड़िकै पराभक्ति मद माते हैं।
श्रीकामदेन्द्र श्रीरामकुंवर संग सख्य नेह के नाते हैं॥

क०—वन्दौं पद सरजू सरित वरजू तिहारे में मंगलमय मंगल महान नहाऊ मैं। पाऊँवर वयन मल रहे न उर अयन रामनाम कहि २ जीह यश गाऊँ मैं। तजि तीर रावरो अवध रसरङ्गमणि अनत न जाऊँ नित नेहसि निभाऊँ मैं। श्याम गौर ध्याऊँ भवभाम को भुलाऊँ सीताराम को कहाऊँ योंही जनम विताऊँ मैं॥